Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

REVIEW ARTICLE

# विश्वस्तर पर हिन्दी का विकास

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

# विश्वस्तर पर हिन्दी का विकास

**Usha Rani**

---------------------------------x---------------------------------

"मौखिक या लिखित भाषा का उद्‌गम विचारों के प्रादुर्भाव से होता है। मौखिक भाषा ध्वनि के रूप में कर्णप्रिय होती है, जबकि लिखित भाषा ध्वनि की अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर चित्रमय लिपिक के रूप में चक्षुप्रिय होती है। इस संदर्भ में वाङ्‌मय की संरचना के लिए विचार ही सबसे महत्त्वपूर्ण होते हैं और इनको यदि मातृभाषा में व्यक्त किया जाए तो विचारों का सम्प्रेषण ठीक एवं बोधमय होता है, यह एक वैज्ञानिक सत्य है और इस स्थिति में ही उस भाषा में रचा गया साहित्य उच्चकोटि का होकर विश्वस्तरीय बनने की क्षमता रखता है।"1

सभ्यता का विकास भाषागत विकास का पर्याय होता है। बिना भाषा के मानव पंगु–समान है। भाषा का अस्तित्व मानव–मनों में हिलोरे ले रही थी, लोग स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहे थे। उन्हें संवाद, विश्वास और स्वदेशाभिमान की भाषा चाहिए थी।। स्वतंत्रता–प्राप्ति के दृढ़ संकल्प के साथ ही राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाने का संकल्प भी लिया गया। सन्‌ 1925 के कानपुर अधिवेशन में राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसकी घोषणा भी कर दी थी।

हिन्दी के लिए समय–समय पर अनेक नामों का प्रचलन हुआ, यथा भाषा, भाखा, हिंदवी, हिंदुई, रेखता, दक्खिनी, दकनी, खड़ी बोली, हिन्दुस्तानी, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा आदि। 'कौरवी' या 'मेरठी' के नाम से प्रचलित हिन्दी की 'पश्चिमी हिन्दी' नामक शाखा की बोली से हमारा अभिप्राय खड़ी बोली से है। यही बोली देवनागरी में लिखे जाने पर राजभाषा के रूप में मानी जाती है।

देश के अधिक–से–अधिक समुदायों की एक सम्पर्क भाषा हो, इस तथ्य के अंतर्गत संविधान–निर्माताओं ने संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिन्दी का निर्धारण किया। स्वतंत्रता के संकल्प के साथ ही राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाने का संकल्प भी लिया गया।

वस्तुतः हिन्दी एक ऐसी सर्वमान्य भाषा के रूप में उभरी, जिसे समूचा राष्ट्र अपने दैनिक जीवन में बोलता और समझता है। भाषा को सम्मान देश को सम्मान देने के समान है। भारतेन्दु जी का भाषा–प्रेम इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं–

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल"2

गांधी जी का विचार था कि "कोई भी स्वतंत्र राष्ट्र, राष्ट्र भाषा के बिना गूंगा है।"3

इसी प्रकार डॉ. राममनोहर लोहिया ने हिन्दी के प्रति अपनी सच्ची आस्था को प्रकट करते हुए कहा था कि –

"हिन्दी में सात लाख के करीब शब्द है, जबकि अंग्रेजी में अढ़ाई लाख के आस–पास। इसके अलावा, अंग्रेजी की शब्द गढने की शक्ति नष्ट हो चुकी है। जबकि हिन्दी को अभी अपनी जवानी ही नहीं चढ़ी। संसार की सबसे धनी भाषा है हिंदी, लेकिन बरतनों की भांति इन शब्दों पर धरे–धरे काई जम गई है। ये बरतन मंजने पर ही चमकेंगे, किसी रसायनशाला के अनुसंधान से नहीं। जब कोई काई जमे हुए ऊबड़–खाबड़ शब्दों का इस्तेमाल विश्वविद्यालय, न्यायालय, विधायिकाओं वगरैह में होने लगेगा, तब ये चमकेंगे और इनका अर्थ जमेगा।"4

परन्तु आज हिन्दी को नई दिशा मिल गई है, ग्लोबलाइजेशन और आर्थिक उदारीकरण की जय हो कि इनकी वजह से हिन्दी की जय हो गई है। बदलते जमाने के साथ–साथ हिन्दी बदल रही है और बदलनी भी चाहिए, क्योंकि कोई भी भाषा तभी सर्वस्वीकार और जीवित रह सकती है, जब वह सदानीरा प्रवाहमान सरिता होने की क्षमता रखती हो।

हिन्दी सम्पूर्ण भारत की सर्वोत्कृष्ट व सर्वस्वीकृत भाषा है। आज हिन्दी विश्वभाषा बन चुकी है। आज हम वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहे हैं, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। 20वीं सदी विज्ञान की थी और 21वीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी की है। इतना ही नहीं, आज वायस ऑफ अमेरिका, चीन रेडियो, बी. बी.सी., यू.एन.ओ. के अतिरिक्त नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगलादेश के प्रतिष्ठित रेडियो से हिन्दी–कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। विदेश राज्यमंत्री आनंद शर्मा के यह वाक्य हिन्दी की उस स्थिति को व्यक्त करते हैं, जो न केवल प्रशंसनीय हैं वरन्‌ सम्मानीय भी हैं–

"विश्व हिन्दी सम्मेलन ने बत्तीस साल का सफर पूरा कर लिया है। आज 110 करोड़ भारतीयों की आवाज दुनिया सम्मान के साथ सुन रही है। अब वह दिन दूर नहीं है, जब हिन्दी यू.एन. ओ. की भाषा–सूची में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएगी।"5

भाषिक व्यवहार के रूप में हिन्दी केवल भारत में ही नहीं विश्व के अनेक राष्ट्रों में भी व्यवहार में प्रयुक्त हो रही है। विश्व–क्षितिज पर भारत आज एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर रहा है, इससे सारा जगत भारत की ओर एक ललक से देख रहा है। चीन के बाद विश्व का सबसे बड़ा बाजार होने के कारण भारत से सहज सम्पर्क बनाने के लिए विदेशीजन हिन्दी सीखने के लिए उत्सुक हैं। हिन्दी भाषा एक मात्र ऐसी भाषा है, जिसके लिए विश्व–सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों की वर्तमान शृंखला की वैचारिक शुरुआत सितम्बर 1973 में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के नायक मधुकर राव चौधरी के नेतृत्व में हुई थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया और भारत सरकार

www.ignited.in

ने मई 1974 में पूर्ण सहयोग एवं समर्थन का आश्वासन दिया। इस प्रकार भारतीयों की सार्वभौमिक अखंडता–एकता के लिए तथा हिन्दी को विश्वव्यापी बनाने के उद्देश्य से 1975 में नागपुर विश्व हिन्दी सम्मेलन की जो शोभायात्रा प्रारम्भ हुई उसने जुलाई 2007 में न्यूयार्क में अपने आठवें पड़ाव को पूरा किया। जिनका प्रमुख उद्देश्य मुख्यतः अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की भाषा को उजागर करना, हिन्दी भाषा और साहित्य में विदेशी विद्वानों के योगदान को मान्यता प्रदान करना, प्रवासी भारतीयों के बीच अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिन्दी का विकास करना, विज्ञान और प्रौद्योगियों की आर्थिक विकास और संचार के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोगों को बढ़ावा देना है।

हिन्दी सम्मेलनों की निरन्तरता हिन्दी की सुखद स्थिति को दर्शाती है। प्रथम पाँच हिन्दी–सम्मेलनों का बोधवाक्य–वसुधैव कुटुम्बकम रहा। हिन्दी–सम्मेलनों का दूसरा पहलू यह भी है कि यह अन्य देशों के साथ भारत के माधुर्यपूर्ण संबंधों को मजबूती प्रदान करता है। अभी तक जितने भी हिन्दी–सम्मेलन आयोजित हुए, सभी के द्वारा हिन्दी भाषा वैश्विक मंच पर और ज्यादा सुदृढ़ स्थिति में आ गई।

हिन्दी आज विश्व भाषा के रूप में अनेक देशों में तेजी से लोकप्रिय होती जा रही है और विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं, भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ और संशक्त संवाहिका है, जो विदेशों में बसे करोड़ों की संख्या में प्रवासी भारतीयों और भारत मूल के लोगों के बीच आत्मीयता के संबंध–सूत्र स्थापित करती है।

भारतीयों के अतिरिक्त अनेक विदेशी विद्वानों ने भी हिन्दी में लेखन कार्य कर भाषा के गौरव को बढ़ाया है। अमेरिका में हिन्दी के प्रति गहन रुचि का विस्तार हो रहा है। अमेरिका के मन्दिरों में भी हिन्दी की शिक्षा की व्यवस्था अव्यावसायिक रूप में की जाती है। मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष 74 उच्च संस्थानों में हिन्दी की दशा–दिशा बहुत कुछ अंशों में वही है, जो भारत में है। वह जनभाषा है, जन के साथ जुड़ी हैं।

टोक्यो में पिछले दिनों सम्पन्न हुए हिन्दी उर्दू सम्मेलनों में हिन्दी–ध्वज, जापान में गर्व से लहराया। सम्मेलन के संयोजक प्रो. सुरेश ऋतुपूर्ण ने अपने भाषण में कहा–"टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज ने हिन्दी के अध्यापन के सौ साल पूर्ण किए हैं, जो कि जापान में हिन्दी भाषा के संबंधों की गहराई का अहसास कराता है।"5

इजराइल के तेल अवीव विश्वविद्यालय में सन् 2000 से लेकर पढ़ाई के हर वर्ष के अंत में 'हिन्दी समारोहों' का आयोजन किया जाता है। यहाँ हर वर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस' बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। हर वर्ष इस विश्वविद्यालय में 20–25 विद्यार्थी हिन्दी सीखने के लिए आते हैं। उनके लिए हिन्दी एक भाषा ही नहीं, वरन भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को समझने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

ब्रिटेन में भी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी, अध्यापन की व्यवस्था है, ब्रिटिश म्यूजियम इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की पांडुलिपियों का संग्रह है। लंदन में हिन्दी प्रचार परिषद नामक एक संस्था स्थापित है, जो भारत की राष्ट्र भाषा के प्रचार में संलग्न है।

अर्द्धरात्रि के सूर्य के देश नार्वे में हिन्दी की स्थिति गत पंद्रह–बीस वर्षों में पर्याप्त सुदृढ़ है। यद्यपि नार्वे में अप्रवासी भारतीयों ने लगभग तीस–पैंतीस वर्ष पूर्व से ही रहना आरम्भ किया है, किन्तु इस अल्प अवधि में ही उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली है। इसी बीच उन्होंने अपने ही प्रयत्नों से हिन्दी में अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ किया श्परिचय, 'स्पाइल', त्रिवेणी आदि पर कुछ समय पश्चात् ये बंद हो गई। सन् 1990 के जनवरी मास में नार्वे से ही एक और पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसका नाम है 'शांतिदूत'। इसका क्षेत्र मात्र नार्वे तक सीमित न रहकर किसी हद तक अंतर्राष्ट्रीय है।

"शांतिदूत के प्रकाशन के पीछे यह भी एक उद्देश्य रहा कि उन सब अप्रवासी भारतीय जो विश्व के लगभग एक सौ तीस देशों में करीब एक करोड़ पचास लाख अप्रवासी भारतीयों को एक सूत्र में बांधा जाए तथा अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया जाए। भारत के एक गरिमामय चित्र से उनका साक्षात्कार हो। भारत में जो अच्छा हो रहा है, उससे भी उनका परिचय हो। यह पत्रिका आज विश्व के एक सौ पचास से अधिक देशों तथा एक सौ तीस विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ी जा रही हैं।"7

फीजी में हिन्दी के विकास का इतिहास भरतवंशियों की साधना और उनके विकास का इतिहास है। हिन्दी के इस विकास में कितने ही लेखकों, पत्रकारों, राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों तथा सामाजिक, धाघ्मक संस्थाओं का सक्रिय सहयोग रहा है। फीजीवासियों में अपनी भाषा हिन्दी के प्रति विशेष मोह है। वे हिन्दी को अपनी अस्मिता से जोड़ते हैं तथा उनका दृढ़ विश्वास है कि अपनी भाषा की प्रतिष्ठा और सुरक्षा के माध्यम से ही वे अपनी संस्कृति को जीवित और सुरक्षित रख सकते हैं।

फीजी में आज हिन्दी का विशेष सम्मान है। फीजी का हर भारतीय हिंदी को अपनी अस्मिता का परिचायक मानता है। फीजी में केवल भारतीय ही नहीं, लगभग सभी शिक्षित हिन्दी भाषा समझते हैं, बोलते हैं तथा सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का व्यवहार करते हैं।

इस प्रकार हिन्दी विश्व के 175 देशों में बोली जाती है। विश्व के विविध राष्ट्रों में हिन्दी के पठन–पाठन की व्यवस्था है। विश्व के विशाल जन समूह की भाषा होने के कारण हिन्दी की राष्ट्रभाषा बन सकती है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि विदेशों में हिन्दी की स्थिति अच्छी है, किन्तु भारतीय इससे विमुख हो रहे हैं। विश्व स्तर पर हिन्दी का प्रयोजन प्रवासी भारतीयों को एक सूत्र में बांधा जाए और अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया जाए तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति का विस्तार से आकलन कर विदेशों में भी भारतीय संस्कृति और अस्मिता को बढ़ावा देना है। वास्तव में अगर हिन्दी का साम्राज्य बढ़ाना है तो हमें उन क्षेत्रों को समाहित करना है, जिनकी तरफ अभी रास्ते नहीं बनाए गए हें। एक चढ़ते हुए दरिया की तरह हिन्दी को तटबंधों, किनारों को तोड़ते हुए नई जमीनों को अपने आगोश में ले लेना है। डॉ. लक्ष्मीलाल सिंघवी के शब्दों में –

'कोटि–कोटि कंठों की भाषा

जन–गण की मुखरित अभिलाषा

हिन्दी है पहचान हमारी,

हिन्दी हम सबकी परिभाषा'

इस प्रकार हिन्दी का प्रयोजन विश्व–फलक पर अपने आपको समृद्ध करना और वहाँ बसे प्रवासी भारतीयों को भारतीय सभ्यता और उज्ज्वल संस्कृति की पहचान करवाना है।

## संदर्भ सूची :

1. अमित जोशी, नार्वे में हिन्दी के विविध आयाम, विश्व–क्षितिज पर हिन्दी, प्रथम अंक, पृ. 129

2. काव्य–संग्रह से उद्धृत–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

3. कृष्ण कुमार, विश्व–क्षितिज पर हिन्दी, प्रथम अंक, पृ. 58

4. कैलाशचन्द्र भाटिया तथा श्री मोतीलाल चतुर्वेदी की पुस्तक 'हिन्दी भाषा : विकास और स्वरूप, ग्रंथ अकादमी से साभार'।

5. बालेन्दु दाधीच, हिन्दी जगत, जनवरी–मार्च 2009, पृ. 34

6. सुरेन्द्र विक्रम का लेख, वर्तमान साहित्य, सितम्बर 2008, पृ. 18

7. शकुन्तला बहादुर (अमेरिका), हिन्दी जगत, जनवरी–मार्च 09, पृ. 23